भूपाळी आरती

भूपाळी आरती

– 1। उठा उठा –

उठा उठा सकळ जन वाचे स्मरावा गजानन
गौरीहराचा नंदन गजवदन गणपती || उठा उठा ||

ध्यानि आणुनी सुखमूर्ती, स्तवन करा एके चित्ती
तो देईल ज्ञानमूर्ती मोक्ष सुख सोज्वळ || उठा उठा ||

जो निजभक्तांचा दाता, वंद्य सुरवरां समस्ता
त्यासी गाता भवभय चिंता, विघ्नवार्ता निवारी || उठा उठा ||

तो हा सुखाचा सागर, श्री गणराज मोरेश्वर
भावे विनवितो गिरिधर, भक्त त्याचा होउनी || उठा उठा ||

– 2। घनश्याम सुंदरा –

घनश्याम सुंदरा श्रीधरा अरुणोदय झाला
उठिँ लवकरी वनमाली उदयाचळीँ मित्र आला || घनश्याम ||

आनंदकंदा प्रभात झाली उठि सरली राती
काढिँ धार क्षीरपात्र घेउनि धेनू हंबरती
लक्षिताति वाँसुरेँ हरी धेनुस्तनपानाला
उठिँ लवकरी वनमाली उदयाचळीँ मित्र आला || घनश्याम ||

सायंकाळीँ एकेमेळीँ द्विजगण अवघे वृक्षीँ
अरुणोदय होतांच उडाले चरावया पक्षी
प्रभातकाळीँ उठुनि कावडी तीर्थपथ लक्षी
करुनि सडासंमार्जन गोपी कुंभ घेउनि कुक्षीँ
यमुनाजळासि जाति मुकुंदा दध्योदन भक्षीँ || घनश्याम ||

– 3। ॐ जय जगदीश हरे –

ॐ जय जगदीश हरे
स्वामि जय जगदीश हरे
भक्त जनोँ के संकट
दास जनोँ के संकट
क्षण मे दूर् करे
ॐ जय जगदीश हरे ||

जो ध्यावे फल् पावे
दुख् बिनसे मन् का
स्वामि दुख् बिनसे मन् का
सुख संपति घर् आवे
सुख संपति घर् आवे
कष्ट मिटे तन् का
ॐ जय जगदीश हरे ||

मात पिता तुं मेरे
शरण पडूँ मैँ किस् की
स्वामि शरण कहूँ मैँ किस् की
तुं बिन और् न दूजा
प्रभु बिन और् न दूजा
आस् करूँ मैँ किस् की
ॐ जय जगदीश हरे ||

तुं पूरण् परमात्मा
तुं अंतरयामि
स्वामि तुं अंतरयामि
परब्रह्म परमेश्वर
परब्रह्म परमेश्वर
तुं सब् के स्वामी
ॐ जय जगदीश हरे ||

तुं करुणा के सागर्
तुं पालन् कर्ता

स्वामि तुं पालन् कर्ता
मैँ मूरख् खल् कामी
मैँ सेवक् तुं स्वामी
कृपा करो भर्ता
ॐ जय जगदीश हरे ||

विषय विकार् मिटावो
पाप् हरो देवा
स्वामि पाप् हरो देवा
श्रद्धा भक्ति बढावो
श्रद्धा भक्ति बढावो
संतन् की सेवा
ॐ जय जगदीश हरे ||

तन् मन् धन् सब् (है) तेरा
स्वामि सब् कुच् है तेरा
स्वामि सब् कुच् है तेरा
तेरा तुज् को अर्पण्
तेरा तुज् को अर्पण्
क्या लागे मेरा
ॐ जय जगदीश हरे ||ॐ श्रीसच्चिदानंद सद्गुरु सायिनाथ महाराज् की जै||